श्री जगदीप मिश्र घराना के प्रतिनिधि शिष्य

श्री मौजुद्दीन खाँ

काशी की महान अनुपम संगीत विभूतियों में उस्ताद मौजूद्दीन का नाम संगीत जगत् में हमेशा-हमेशा अक्षय रहेगा, जिन्होंने अपनी अनूठी, रसीली, दर्दीली, चित्राकर्षक बनारसी ढुमरी गायकी की सुगन्धि सम्पूर्ण देश में महकाकर काशी की महत्ता एवं गौरव को महिमामण्डित करने में विशेष योगदान दिया। आपका जन्म पंजाब में पटियाला के समीप हिमाचल प्रदेश की छोटी सी रियासत नाहन में सन् १८७५ ई. में एक संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम उस्ताद गुलाम हुसैन एवं चाचा का नाम उस्ताद रहमत हुसैन एवं उस्ताद खाँ था। दोनों ही भ्राता धुरन्धर गायक एवं सितार वादक थे। आपके चाचा रहमत खाँ के नाना उस्ताद सुलह खाँ अपने युग में पंजाब के विशिष्ट गायक थे, जिनकी बेटी जेबुन्निसा (जो आपकी माता थीं) को संगीत की शिक्षा पिता के घर से विरासत में प्राप्त थी। मौजुद्दीन खां के छोटे भाई का नाम रहीमुद्दीन खाँ, जो ढुमरी के प्रसिद्ध गायक थे और जिनसे लखनऊ नृत्य घराने के अप्रतिम नर्तक शम्भू महाराज ने ढुमरी की शिक्षा ली। श्री मौजुद्दीन खाँ के एकमात्र पुत्र शमसुद्दीन खाँ कुशल हारमोनियम वादक एवं गायक थे, जो कलकत्ता में रहते हुआ वहीं दिवंगत हुए। मौजुद्दीन खाँ की एकमात्र बहन रहीमुन्निसा बेगम काशी में फाटक शेख सलीम पर रहती थी।

जब मौजुद्दीन खाँ की उम्र ४-५ वर्ष की थी तभी उनके पिता पंजाब छोड़कर काशी आ बसे और फाटक शेख सलीम (नई सड़क) मुहल्ले में एक मकान लेकर रहने लगे, जिसमें अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक आपकी बहन रहीमुन्निसा रहती थीं। बाद में मौजुद्दीन खाँ मुहल्ला छत्तावाले (नारियल बाजार के समीप) आ बसे। बनारस की रसीली मिट्टी की सुगन्ध, संगीत के धुरन्धर दिग्गज, रससिद्ध विद्वानों की सत्यंगति, संगीत के कद्रदान रईसों के प्यार ने खाँ साहब को ऐसा मोहित किया कि आप पंजाब-पटियाला-नाहन को एकदम भूलकर हमेशा-हमेशा के लिए काशी के हो गए। काशी नगरी ने भी इस अनूठे कलाकार को प्यार-दुलार देने में कोई कसर नहीं रखी। यद्यपि बाल्यकाल में आपको संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने चाचा एवं पिता से ही मिली, किन्तु गायकी की भरपूर शिक्षा माता जेबुन्निसा ने दी, जिन्हें अपने पिता सुलाह खाँ के सिखाए एक सैकड़ों ख्याल याद थे। माँ ने वह सभी मौजुद्दीन खाँ को कंढस्थ करा दिये। संगीत प्रतिभा एवं कंढमाधुरी ईश्वर प्रदत्त थी। पिता की मृत्यु के उपरान्त आप गायन की शिक्षा लेने के लिए पटियाला घराना के देश-प्रसिद्ध गायक बन्धु 'अलिया-फत्तू' के पास गए और उनसे ख्याल गायकी की शिक्षा ग्रहण की। बीच-बीच में आप काशी आते रहते थे। एक बार काशी के अप्रतिम ढुमरी गायक श्री जगदीप मिश्र का गायन सुनकर आप ऐसे प्रभावित हुए कि उनकी प्रेरणा से उन्हीं के सान्निध्य में बैठकर छोटी-छोटी चीजों का अभ्यास करते-करते एक दिन ऐसा भी आया कि आप जगदीप मिश्र की रससिद्ध ढुमरी गायकी की प्रतिमूर्ति बनकर देश के अप्रतिम ढुमरी गायक के सिंहासन पर बिराजमान हुए।

आपने ख्याल एवं ढुमरी दोनों ही शैलियों की शिक्षा प्राप्त की थी, इसलिए दोनों ही अंगों की गायकी में अच्छी दमकशी, डपट, शहजोरी, मर्दानापन की विशिष्ट झलक परिलक्षित होती थी। आप ख्याल गाते समय चक्करदार तानों की झडी लगा देते थे। आपका गला गमक, खनक, मुर्की, फिरत, सुरीलापन एवं गंभीरता से युक्त था। गले को कहाँ खोलना चाहिए, इन सभी बातों से पूर्णतया आप अभिज्ञ थे, इसलिए मुर्की से ओतप्रोत पूरी आवाज से जब सुर की पुकार लगाते थे तो लोगों के दिलों में एक हलचल सी मच जाती थी, लोग आपकी जादूभरी आवाज के आगोश में आकंढ डूबकर आपकी गायकी के मुरीद बन जाते थे। बनारस अंग की ढुमरी एवं टप्पा गायन की विशिष्ठ शैली के कीर्तिस्तम्भ गायक के रूप में मौजुद्दीन खाँ का नाम संगीत इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा, जिन्हें अपनी अविस्मरणीय गायकी से पत्थर-दिल इन्सानों को भी मोम बनाने में महारत हासिल थी।

मौजुद्दीन खाँ जब भी गाते तो काशी के अप्रतिम ढुमरी गायक श्री जगदीप मिश्र की गायकी को याद करके 'आह' करते। इ सी से कल्पना की जा सकती है कि जगदीप जी कैसे रससिद्ध गायक रहे होंगे, जिनकी गायकी की याद मौजुद्दीन खाँ जैसे अनूठे गायक की भी सारी जिन्दगी के लिए अमिट बन गई। वस्तुतः मौजुद्दीन खाँ जैसे विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

कलाकार कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। देश की जानी-मानी रिकार्डिंग करके उन्हें देश की अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित कर रखा है। (१) पानी भरे री, कौने अलबेले की नार हो, झामाझम (२) पिराय मोरी अँखियाँ राजा हमसे ना बोलो। (३) पिया बिनु नाहीं आवत चैन (४) बाजूबन्द खुलि खुलि जाय।

सन् १९१९ ई. में काशी के छत्तावाले मुहल्ले में ४५ वर्ष की अल्पायु में सम्पूर्ण संगीत जगत् को शोकाकुल कर मौजुद्दीन खाँ स्वर्गवासी हुए और काशी के फातमान कब्रिस्तान में दफनाए गए। आपकी मृत्यु का समाचार सुनकर काशी अपने चहेते कलाकार की मृत्यु से अत्यन्त मर्माहत हुई और पूरी काशी के संगीतज्ञों, नागरिकों, संगीत-प्रेमियों की अपने प्रिय कलाकार के लिए मौन संगीताञ्जलि थी। नगर का संगीत-समाज अपने अमूल्य संगीत रत्न को खोकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ और शोकातुर था। उस्ताद मौजुद्दीन खाँ ने अपनी अनूठी, अलबेली, रससिद्ध ठुमरी गायकी की जो अमिट छाप छोड़ी है, वह संगीत-जगत् के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगी।

काशी के गेरे-पेशेवर ठुमरी गायकों में प्रसिद्ध रामा जी शुक्ल गुजराती, धीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती मौजुद्दीन खाँ की ठुमरी गायकी पर फिदा थे और उनकी हर संगीत महफिल के मुरीद संगीत-भक्त श्रोता थे। आप लोगों की ठुमरी गायकी पर खाँ साहब की स्पष्ट छाप थी। काशी की सुप्रसिद्ध गायिका बड़ी मोती बाई ने काशी के घरानेदार संगीतज्ञों के अतिरिक्त मौजुद्दीन खाँ से भी ठुमरी गायन की शिक्षा प्राप्त की और अपने युग में विशिष्ट ठुमरी, टप्पा गायिका के रूप में विशेष यश, धन, ख्याति, आदर, स्नेह प्राप्त कर काशी का गौरव बढ़ाया। कलकत्ता निवासी श्यामलाल, क्षेत्रिय, अमियनाथ सान्याल, रेखा मुहुरी आदि मौजुद्दीन खाँ की शिष्य-परम्परा में थे।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.